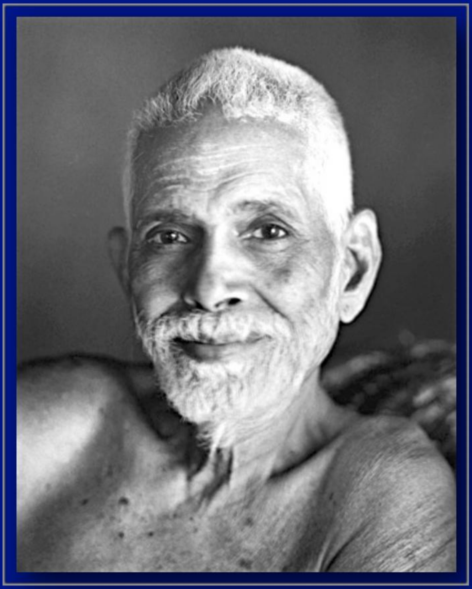
एलम ओन्ड्रे

'सब एक हैं'



"यदि आप मोक्ष चाहते हैं तो एलम ओन्ड्रे में दिए गए निर्देशों को लिखें, पढ़ें और अभ्यास करें।"

~ भगवान श्री रमण महर्षि

एक ईबुक

प्रस्तावना

एक अन्य अवसर पर जब मैंने भगवान से मेरे लिए कुछ पठन सामग्री चुनने के लिए कहा, तो उन्होंने मुझे छह पुस्तकों की एक छोटी सूची दी: कैवल्य नवनीतम, रिभु गीता, अष्टावक्र गीता, एलम ओन्ड्रे, स्वरूप सरम और योग वशिष्ठम।

उन्होंने एलम ओन्ड्रे पर विशेष जोर देते हुए मुझसे कहा, "यदि आप मोक्ष चाहते हैं तो एलम ओन्ड्रे के निर्देशों को लिखें, पढ़ें और अभ्यास करें।"

~ अन्नामलाई स्वामी "भगवान के शब्दों के अनुसार जीना"

एक फ्रांसीसी भक्त जो अंग्रेजी नहीं बोल सकता था और मेरी पिछली यात्रा के दौरान श्री रामाश्रमम में रह रहा था, ने मुझसे कुछ निजी मामले पर यात्रा के लिए अन्नामलाई आश्रम में चलने के लिए कहा। जब मैं वहां इस भक्त के लिए अनुवाद कर रहा था तो मैंने बिक्री के लिए अन्नामलाई स्वामी की पुस्तक, "लिविंग बाय द वर्ड्स ऑफ भगवान" देखी। मैंने तुरंत इसे खरीद लिया और इसे पढ़ते समय मुझे "सब एक है" का संदर्भ मिला । मैं किसी तरह इस पुस्तक के बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक हो गया और श्री रामानाश्रमम बुक डिपो में पूछा कि क्या इस तमिल पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध है। हालाँकि इसे श्री भगवान द्वारा "भगवान के साथ दिन-ब-दिन" में अनुशंसित किया गया था, फिर भी कोई भी मुझे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं दे सका।

मेरे जाने से चार या पाँच दिन पहले मुझे कुछ याद आया कि शायद अन्नामलाई आश्रम में मुझे पुस्तक के बारे में कुछ जानकारी मिल सकती है। आश्रम प्रबंधक ने मुझे बताया कि यह केवल तमिल में उपलब्ध है और अंतिम अंग्रेजी अनुवाद 1950 के आसपास निजी तौर पर मुद्रित किया गया था। हालाँकि, उनके पास उस अनुवाद की एक फोटो कॉपी थी और उन्होंने मुझे इसे अपने लिए कॉपी करने की अनुमति दी।

लगभग उसी समय, एक फ्रांसीसी भक्त, जिसके साथ मैंने पुस्तक के बारे में पहले चर्चा की थी, मेरे पास आया और मुझे फ्रांसीसी अनुवाद दिखाया। पांडिचेरी में छपने के बावजूद उसने इसे पेरिस में खरीदा था।

अब मैं इसे आपको भेज रहा हूं क्योंकि मुझे लगता है कि हमें इसे भक्तों और अद्वैत छात्रों के लाभ के लिए प्रकाशित करने का प्रयास करना चाहिए, भले ही यह एक छोटे सस्ते ब्रोशर के रूप में हो। ऐसा प्रतीत होता है कि 19वीं शताब्दी की इस गुमनाम रचना को श्री महर्षि ने अत्यधिक महत्व दिया था और केवल इसी कारण से, मुझे यकीन है कि कई लोग इसका अध्ययन करने में रुचि लेंगे।

~ यूरिको एमएस साराइवा, लिस्बन, पुर्तगाल से एक पत्र

विषयसूची

प्रत्येक अध्याय में आपके चिंतन/मनन के लिए दस बिंदु हैं।

ध्यान दें: यह ईबुक एक प्रारंभिक अनुवाद की स्कैन की गई प्रति से बनाई गई थी और कुछ अन्य संस्करणों से भिन्न है, ऐसा प्रतीत होता है कि शब्दों को बदलकर या जोड़कर इस पुराने संस्करण को संपादित किया गया है। मूल पाठ में हमारा एकमात्र जोड़ अध्याय II में उपयुक्त बिंदु पर लुप्त संख्या '7' को जोड़ना था। हमने विभिन्न पृष्ठों पर हॉटलिंक के साथ-साथ कुछ तस्वीरों के साथ एक विषय-सूची भी जोड़ी है।

प्रस्तावना

पुरुष सुख की सराहना करते हैं और दुख से दूर रहते हैं। यही बात अन्य प्राणियों के साथ भी है। यह मानव जाति के सामान्य वर्ग के लिए अच्छा है। लेकिन उच्च व्यवस्था सही आचरण पर आमादा है, जो भी अच्छाई या बुराई ला सकती है उसे धैर्यपूर्वक सहन करती है। इनके साथ संगति स्थायी होगी, जबकि सामान्य लोगों के साथ संगति नहीं होगी। उच्च स्तर की संगति से ही दुनिया का भला होगा।

फिर सवाल उठता है: "क्या सही है?" बिंदु महत्वपूर्ण है, लेकिन उत्तर नहीं मिल पाया है। क्यों? क्योंकि जो सही है वह परिस्थितियों से निर्धारित होता है। विषय पर चाहे जितना भी व्यापक काम लिखा जाए, हमेशा ऐसी परिस्थितियाँ होंगी जिनकी लेखक ने कल्पना नहीं की होगी। इसलिए उस स्थिति को समझना आवश्यक हो जाता है जो हमें विभिन्न स्थितियों का आकलन करने और यह निर्धारित करने में सक्षम बनाएगी कि क्या सही है।

वह अवस्था एक ही है। इसके जैसा कोई राज्य नहीं है. हालाँकि यह एकल है, यह असाधारण है कि सांसारिक बुद्धिमान इसे अत्यंत दुर्लभ मानते हैं। इससे अधिक असाधारण कुछ नहीं हो सकता. उपनिषदों में उस अद्वितीय अवस्था की शिक्षा बहुत स्पष्ट रूप से दी गई है। इस पुस्तक में मैंने अपनी समझ के अनुसार वही सत्य रखा है। मैंने इसे अपना कर्तव्य समझा है. मैं मौलिकता का दावा नहीं करता. इस पुस्तक के छह अध्याय आपस में इतने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं कि एक अध्याय में अपेक्षित कुछ बिंदु दूसरे अध्याय में भी मिल सकते हैं। फिर, कुछ बिंदु जो सतही तौर पर पढ़ने पर स्पष्ट नहीं हो सकते, बारीकी से अध्ययन करने पर स्पष्ट हो जायेंगे। प्रमुख कार्यों या संतों से अधिक जानकारी एकत्र की जा सकती है। विश्वमाता, गुरु सच्चा, हमें बचायें!

~ लेखक

अध्याय I - एकता

1. आपके और आपके द्वारा देखे गए संसार सहित, संसार के द्रष्टा, एक ही है.

2. आप जिसे भी मैं, तू, वह, वह और यह मानते हैं, वह सब एक ही है।

3. जिसे आप संवेदनशील प्राणी मानते हैं और जिसे आप असंवेदनशील मानते हैं, जैसे कि पृथ्वी, वायु, पृथ्वी और जल, वे सभी एक ही हैं।

4. सभी को एक मानने से जो अच्छाई प्राप्त होती है, वह प्रत्येक को दूसरे से अलग मानने से नहीं हो सकती। इसलिए सभी एक हैं।

5. सभी की एकता का ज्ञान, आपके लिए भी अच्छा है और दूसरों के लिए भी अच्छा है कुंआ। इसलिए सभी एक हैं।

6. जो देखता है कि "मैं अलग हूं," "तुम अलग हो," "वह अलग है" इत्यादि, वह अपने लिए एक तरह से कार्य करता है और दूसरों के लिए दूसरे तरीके से कार्य करता है। वह ऐसा करने में मदद नहीं कर सकता. यह विचार कि "मैं अलग हूं, अन्य अलग हैं" वह बीज है जिससे अलग-अलग व्यक्तियों के संबंध में अलग-अलग कार्यों का वृक्ष उगता है। जो व्यक्ति दूसरों के साथ स्वयं की एकता को जानता है, उसकी धार्मिकता में कमी कैसे हो सकती है? जब तक भेदभाव का अंकुर मौजूद है, तब तक अलग-अलग कार्यों का वृक्ष, अनजाने में भी, नष्ट हो जाएगा। इसलिए भेदभाव छोड़ो। सब एक ही है.

7. पूछें: “यदि दुनिया में सभी चीजें अलग-अलग दिखाई देती हैं, तो मैं सभी को एक कैसे मान सकता हूं? क्या यह ज्ञान प्राप्त करने का कोई तरीका है?” उत्तर है: “एक ही पेड़ में हम पत्ते, फूल, जामुन और शाखाएँ देखते हैं, एक दूसरे से भिन्न, फिर भी वे सभी एक हैं क्योंकि वे सभी 'पेड़' शब्द में शामिल हैं। उनकी जड़ एक ही है; उनका रस एक जैसा है. इसी प्रकार, सभी चीजें,

सभी शरीर, सभी जीव एक ही स्रोत से हैं और एक ही जीवन सिद्धांत द्वारा सक्रिय हैं। इसलिए सभी एक हैं।

8. हे भले आदमी! क्या यह कथन कि "सब एक है," अच्छा है या बुरा? अपने लिए सोचें. जिस प्रकार वह व्यक्ति हमेशा धर्मी होगा जो स्वयं को दूसरों के समान और दूसरों को अपने जैसा मानता है, तो कोई भी बुराई उसके साथ कैसे जुड़ सकती है जो स्वयं को दूसरों के रूप में और दूसरों को अपने जैसा मानता है? मुझे बताएं कि क्या एकता के ज्ञान से अच्छाई प्राप्त करने का कोई बेहतर तरीका है?

निश्चित रूप से अन्य विधियाँ इस विधि जितनी अच्छी नहीं हो सकतीं। कोई दूसरों को स्वयं के रूप में जानकर, उन्हें एकता में जानने से अधिक प्रेम कैसे कर सकता है-एकता के रूप में प्रेम करें, क्योंकि वे वास्तव में एक हैं।

9. एकता के ज्ञाता की मानसिक शांति और ताजगी को कौन साझा कर सकता है?

उसे कोई परवाह नहीं है. सबकी भलाई में ही उसकी भलाई है। एक माँ अपने बच्चों की भलाई को अपनी भलाई मानती है। फिर भी, उसका प्यार परिपूर्ण नहीं है क्योंकि वह सोचती है कि वह अलग है और उसके बच्चे अलग हैं। एक ऋषि का प्रेम, जिसने सभी की एकता का एहसास किया है, एक माँ के प्रेम से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ है। एकता के ज्ञान के अलावा ऐसे प्रेम को प्राप्त करने का कोई अन्य साधन नहीं है। इसलिए सभी एक हैं।

10. जानो कि सम्पूर्ण जगत् तुम्हारा अविनाशी शरीर है, और तुम ही सारे जगत् के अनन्त जीवन हो। मुझे बताएं कि क्या ऐसा करने से कोई नुकसान है? हानिरहित रास्ते पर जाने से कौन डरता है? हिम्मत रखो। वेद यही सत्य सिखाते हैं। यहां आपके अलावा कुछ भी नहीं है। सब अच्छा होगा तुम्हारा. हाँ, आप स्वयं अच्छे बन जाते हैं। दूसरों को आपसे जो कुछ भी प्राप्त होगा वह अच्छा ही होगा। कौन अपने शरीर और आत्मा के साथ बुरा काम करेगा? शरीर में फोड़ा होने पर एक उपाय किया जाता है। भले ही उपाय कष्टकारी हो, परंतु वह भलाई करने के लिए ही होता है। ऐसे होंगे आपके कुछ कार्य; वे विश्व की भलाई के लिए भी होंगे। उस कारण से, आप भेदभाव में शामिल नहीं होंगे। मैं इसे संक्षेप में कहता हूं: एकता का ज्ञाता वैसा ही कार्य करेगा जैसा उसे करना चाहिए। वस्तुतः एकता का ज्ञान ही उससे कार्य कराता है। वह गलती नहीं कर सकता. संसार में, वह ईश्वर द्वारा दृश्यमान बनाया गया है। सब एक हैं।

अध्याय II - आप

1. आप कौन हैं? क्या आप यह शरीर हैं? यदि हां, तो जब आप गहरी नींद में होते हैं तो आपको सांप के रेंगने का पता क्यों नहीं चलता? तो फिर क्या आप यह शरीर हो सकते हैं? नहीं, बिल्कुल नहीं. तुम्हें इस शरीर से भिन्न होना चाहिए।

2. कभी-कभी नींद में आप सपने देखते हैं. वहां आप अपनी पहचान किसी के साथ करते हैं। क्या आप वह हो सकते हैं? आप नहीं हो सकते। अन्यथा, आपके जागने पर उस व्यक्ति का क्या होगा? तुम वह नहीं हो.

इसके अलावा, आपको उसके साथ अपनी पहचान बताने में शर्म आती है।
स्पष्टतः, आप वह विशिष्ट व्यक्ति नहीं हैं। आप ही हैं जो उससे अलग खड़े हैं।

3. स्वप्नहीन निद्रा की स्थिति को याद करें। फिर आपकी क्या स्थिति है? क्या यह आपका वास्तविक स्वभाव हो सकता है? निश्चय ही आप इस विश्वास से सहमत नहीं होंगे। क्यों?
क्योंकि आप इतने मूर्ख नहीं हैं कि अपने आप को उस व्यापक अंधकार से पहचान सकें जो आपको उस स्थिति को जानने से रोकता है जिसमें आप हैं।
आस-पास की चीज़ों को बुद्धि द्वारा पहचाने जाने पर, आप स्वयं को अज्ञानी या रिक्त के समान कैसे स्वीकार कर सकते हैं? या, यह वास्तव में आपका वास्तविक स्वभाव कैसे हो सकता है? ये नहीं हो सकता। आप वह ज्ञाता हैं जो जानते हैं कि यह अवस्था आपके वास्तविक स्वरूप को ढकने वाले घने अंधकार में से एक बनी हुई है। आप वह कैसे हो सकते हैं जिसे आपने अनुभव किया है और जिसकी आपने निंदा की है? इसलिए आप गहरी नींद का अंधकारमय अज्ञान नहीं हैं। आप इससे भी अलग खड़े हैं.

4. जब यह कहा जाता है कि यह स्थूल शरीर भी आप नहीं हैं, तो क्या आप कोई अन्य वस्तु हो सकते हैं जो आपसे अभी भी दूर है? उसी तरह जैसे आप यह स्थूल शरीर नहीं हैं, आप शरीर से कुछ भी दूर नहीं हैं, न ही स्वप्न व्यक्ति, न ही गहरी नींद की अज्ञानता। आप इन तीन अवस्थाओं और इस संसार से भिन्न हैं।

5. इन तीन अवस्थाओं को केवल दो स्थितियों तक ही सीमित किया जा सकता है - अर्थात्, एक विषय और वस्तु की, और दूसरी स्वयं विषय की अनभिज्ञता है। पूर्व में जाग्रत और स्वप्न अवस्था शामिल है, जबकि बाद वाली गहरी नींद का प्रतिनिधित्व करती है। आपके सारे अनुभव इन्हीं दो स्थितियों में समाहित हैं। ये दोनों आपके लिए विदेशी हैं। आपका वास्तविक स्वरूप उनसे भिन्न रहता है।

6. यदि आप पूछें कि वह क्या है, तो इसे तुरीय कहा जाता है, जिसका अर्थ है चौथी अवस्था। इस नाम का उपयोग क्यों किया जाता है? यह नाम उचित है क्योंकि यह कहता है कि आपके अनुभव की तीन अवस्थाएँ - जाग्रत, स्वप्न और गहरी नींद - आपके लिए विदेशी हैं और आपकी वास्तविक स्थिति चौथी है, जो इन तीनों से अलग है। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीन अवस्थाओं को एक दीर्घ स्वप्न बनाने के लिए लिया जाना चाहिए, चौथी अवस्था इस स्वप्न से जागृति का प्रतिनिधित्व करती है। यह गहरी नींद की तुलना में अधिक प्रत्याहारित है, जाग्रत अवस्था की तुलना में अधिक जाग्रत भी है।

7. इसलिए आपकी वास्तविक अवस्था वह चौथी है जो जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था से भिन्न है। तुम वही हो. यह चौथी अवस्था क्या है? यह वह ज्ञान है जो किसी भी चीज़ को विशिष्ट नहीं बनाता। यह स्वयं से अनभिज्ञ नहीं है. कहने का तात्पर्य यह है कि, चौथी अवस्था शुद्ध ज्ञान है जो किसी भी वस्तु के प्रति सचेत नहीं है, लेकिन स्वयं अचेतन भी नहीं है। केवल जिसने इसे एक क्षण के लिए भी महसूस किया है, उसने सत्य को महसूस किया है। तुम वही हो.

8. जिसने चौथी अवस्था प्राप्त कर ली उसके लिए इससे अधिक और क्या है? व्यवहारिक रूप से किसी के लिए भी उस अवस्था में, अर्थात बिना किसी विशेष ज्ञान की अवस्था में, सदैव बने रहना संभव नहीं है। जिसने चौथी अवस्था को जान लिया वह बाद में इस दुनिया में जागता है, लेकिन उसके लिए यह दुनिया पहले जैसी नहीं रहती। वह देखता है कि जिसे उसने चौथी अवस्था के रूप में महसूस किया, वह इस सब के रूप में चमकता है। वह इस संसार की कल्पना उस शुद्ध ज्ञान से भिन्न नहीं करेगा। जो उसने भीतर देखा, अब वह बाहर भी भिन्न रूप में देखता है। अब वह पुराने भेद के स्थान पर सर्वत्र अभेद भाव की स्थिति में स्थापित हो गया है। अब, वह सब कुछ है. यहां स्वयं से भिन्न कुछ भी नहीं है। उसकी आँखें बंद हों या खुली हों, चीज़ें चाहे कितनी भी बदल जाएँ,

उसकी स्थिति अपरिवर्तित रहती है. यह ब्रह्म की अवस्था है। यह प्राकृतिक शाश्वत अवस्था है। आप वह नित्य सत्य अवस्था हैं।

9. इस अवस्था से परे कुछ भी नहीं है। 'भीतर' और 'बाहर' इन शब्दों का उसके लिए कोई अर्थ नहीं है। सब एक हैं। उसका शरीर, वाणी और मन स्वार्थवश कार्य नहीं कर सकते। उनके कार्य सभी की भलाई के लिए अनुग्रहकारी होंगे। खंडित "मैं" हमेशा के लिए खो जाता है। उसका अहंकार कभी पुनर्जीवित नहीं हो सकता। इसलिए कहा जाता है कि वह यहीं और अभी मुक्त हो गया है। वह इसलिए नहीं जीवित रहता है क्योंकि उसका शरीर जीवित रहता है, न ही वह इसलिए मरता है क्योंकि उसका शरीर मर जाता है। वह शाश्वत है. उसके अलावा यहां कुछ भी नहीं है. तुम वही हो.

10. भगवान कौन है? वह अनुग्रह है. अनुग्रह क्या है? खंडित अहंकार के बिना जागरूकता. कोई कैसे जान सकता है कि ऐसी कोई अवस्था है? केवल तभी जब किसी को इसका एहसास हो। वेद ऐसे व्यक्ति की सराहना करते हैं जिसने ईश्वर को जान लिया हो और उसके साथ एक हो गया हो। इसलिए सबसे बड़ा भला जो कोई व्यक्ति संसार से प्राप्त कर सकता है और सबसे बड़ा भला जो कोई इसे प्रदान कर सकता है, वह है इस स्थिति का एहसास करना। वास्तव में, इसके अलावा कोई राज्य नहीं हैं। वे अज्ञान की अवस्था में प्रकट होते हैं। जो जानता है, उसके लिए राज्य एक ही है। तुम वह हो।

अध्याय III - भगवान

1. भगवान कौन है? ईश्वर वह है जो हमारे द्वारा देखी गई सभी चीज़ों से परे है। यदि इस संसार को पार कर लिया जाए तो क्या उसके और इस संसार के बीच कोई संबंध नहीं है? यहां एक भी कण उससे असंबंधित नहीं है। फिर संसार को पार करने का क्या मतलब है? इस संसार में हम और हमारे द्वारा देखी गई वस्तुएँ शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, चेतन और निर्जीव मिलकर संसार का निर्माण करते हैं।

   हम उसके बारे में क्या कहें जिसने प्राणियों और वस्तुओं को बनाया? इन दोनों में से हम चेतन सत्ताओं को श्रेष्ठ कहते हैं। हम जो कुछ भी समझ सकते हैं वह यह है कि वह हमारे द्वारा ज्ञात प्राणियों के उच्चतम क्रम से संबंधित है। हमारी बुद्धि आगे नहीं बढ़ पाती. हमारा रचयिता हमसे श्रेष्ठ है; वह हमारी बुद्धि से नहीं पकड़ा जा सकता; इसलिए उनका नाम, पारलौकिक अस्तित्व, "कदावुल" का अर्थ है कि वह हमारी बुद्धि से परे है।

   इसलिए उनका नाम "कदावुल" है - पारलौकिक अस्तित्व।

2. तो फिर क्या परमेश्वर हम पर प्रगट नहीं हो सकता? बिल्कुल ऐसा नहीं है. एक तरह से वह हमें ज्ञात है। उनकी इतनी ही कृपा हमारे लिए काफी है। हमें उनकी सारी महानता की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने अपनी महानता के बारे में इतना बताया है कि यह हमारे दुख को मिटाने के लिए पर्याप्त होगा। वर्तमान स्थिति में हमारे दोषों को दूर करने के लिए आवश्यक से अधिक अपनी शक्ति को प्रकट करने का कोई कारण नहीं है। वह हमारी आवश्यकता के अनुसार जाना जाता है। नहीं, वह तो हमारी मुट्ठी में है। हालाँकि असीमित, वह हमारे ज्ञान की पहुंच के भीतर है

   कुछ हद तक।

3. वह क्या है जो उसे हमारे ज्ञान की पहुंच के भीतर लाता है? वह है बीइंग-कॉन्शसनेस-ब्लिस के रूप में जाना जाता है।

   सत् का अर्थ है वह जो अविनाशी है, जो सदैव विद्यमान है।
   क्या उसे किसी भी समय अस्तित्वहीन हो जाना चाहिए, उसका विनाशक कौन है? उसे किसने बनाया? चूँकि सभी के नाशवान स्वभाव से ही यह निष्कर्ष निकलता है

उनका स्वामी वह है जो अविनाशी है, यह अमर अधिपति ईश्वर है। उसका अविनाशी स्वभाव सत् है।

अब, चेतना (चित) क्या है? चेतना से हमारा तात्पर्य ज्ञान से है। यह पूर्ण ज्ञान है, न कि हमारे त्रुटिपूर्ण बौद्धिक ज्ञान की तरह। अनियमितता या गलती उसके कार्यों पर दाग नहीं लगा सकती। यह ज्ञान है, शुद्ध और सरल। अक्सर वह हमें यह कहते हुए सिखाते हैं, "तुम्हारा ज्ञान अनियमित और त्रुटिपूर्ण है।" उसकी रचना की अचेतन वस्तुएँ भी कितनी व्यवस्थित हैं! यह बहुत से लोग जानते हैं कि कैसे एक नास्तिक को एक अच्छा सबक सिखाया गया था जब उसने चीजों की योजना का उपहास करते हुए कहा था, "उसने बरगद के पेड़ के लिए बीज को इतना छोटा क्यों बनाया जो इतना बड़ा है?" कोई असंवेदनशील चीज़ अच्छे क्रम में पाई जाती है और बाद में उपयोगी हो जाती है, इसका तात्पर्य है कि काम पर एक जागरूक एजेंसी। क्या कोई साधारण, अचेतन वस्तु कुछ ऐसा कर सकती है जो अमोघ ज्ञान के लिये ही सम्भव हो? या, क्या यह हमारे अपर्याप्त ज्ञान से नहीं हो सकता? नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता. इसलिए ईश्वर को चेतना (चित) भी कहा जाता है।

अब, आनंद क्या है? यह किसी भी चीज़ की इच्छा से मुक्त होने की स्थिति है। यह शांति है जो हमेशा भरी रहती है। यदि उसे किसी चीज़ की इच्छा होती, तो वह हमसे बेहतर कैसे हो सकता था? हम उससे आनंद कैसे प्राप्त कर सकते हैं? उसे स्वयं अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए किसी अन्य प्राणी की आवश्यकता होगी। लेकिन कौन उसे ऐसा समझेगा? आत्म-सन्तोष की स्थिति भी परमानन्द की ही है। इसलिए उन्हें परमानंद (आनंद) कहा जाता है।

ये तीन - अस्तित्व, चेतना और आनंद - अविभाज्य हैं; अन्यथा, वे व्यक्तिगत रूप से शून्य हो जायेंगे। इसलिए, उन्हें सत्-चेतना-आनंद (सच्चितानंद) के रूप में जाना जाता है। ईश्वर न केवल उत्कृष्ट रहता है बल्कि सत्-चेतना-आनंद के रूप में हमारे ज्ञान की पहुंच में भी आता है।

4. जिसने चौथी अवस्था प्राप्त कर ली है और सभी को एक के रूप में देखता है, केवल वही ईश्वर को वास्तव में सत्-चेतना-आनंद के रूप में जानता है। न तो शब्द व्यक्त कर सकते हैं और न ही कान सुन सकते हैं कि ऐसा व्यक्ति ईश्वर के साथ कैसे एकाकार हो जाता है; यह अहसास की बात है.

लेकिन ऐसी प्राप्ति के लिए रास्ते और साधन हैं। उनके बारे में बात की जा सकती है, सीखा जा सकता है और उन पर कार्य किया जा सकता है।

5. जिसे इस प्रकार महसूस किया जा सकता है, वह ईश्वर है। उसका कोई नाम नहीं है; हम उसे एक नाम देते हैं. उसका कोई रूप नहीं है; हम उसे एक रूप देते हैं. ऐसा करने में नुकसान कहां है? कौन सा नाम उसका नहीं है, या कौन सा रूप उसका नहीं है? वह ध्वनि या रूप कहां है जिसमें वह नहीं है? इसलिए, उसके बारे में सच्चे ज्ञान के अभाव में आप उसे याद रखने के लिए अपनी इच्छानुसार उसका नाम रख सकते हैं या किसी भी रूप में उसकी कल्पना कर सकते हैं। आपकी ओर से किसी भी प्रयास के बिना उनकी कृपा की आपकी आशा पूरी तरह से निरर्थक है। यदि आपकी ओर से बिना किसी प्रयास के उनकी कृपा प्राप्त करना संभव हो, तो सभी एक जैसे होंगे; मतभेद का कोई कारण नहीं होगा. उन्होंने हमें रास्ते और साधन बताये हैं. प्रयास करो, लक्ष्य तक पहुँचो, खुश रहो। आपकी आलस्य और स्वार्थीता आपको बिना प्रयास के उनकी कृपा की उम्मीद करने पर मजबूर कर देती है। जो नियम सबके लिए है वही आपके लिए भी है। अपने प्रयासों में ढील न दें. आपके प्रयास से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

6. यहाँ एक ऐसा प्रयास है जो अन्य सभी से श्रेष्ठ है। हालाँकि, यह नाम और रूप के साथ भगवान की भक्ति से कम प्रभावी प्रतीत हो सकता है। फिर भी, यह अधिक कुशल है. यह बस वह प्रेम है जो आप सभी प्राणियों के प्रति बढ़ाते हैं, चाहे वे अच्छे हों या बुरे। सभी के प्रति ऐसे प्रेम के अभाव में, भगवान के प्रति आपकी भक्ति महज एक हास्यानुकृति बनकर रह जाती है। तुम भगवान के किस काम के हो? आप दुनिया में जरूरतमंदों के प्रति अपना कर्तव्य निभाए बिना भगवान से अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहते हैं, इसे आपके स्वार्थ के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। परमेश्वर की उपस्थिति में, इसका कोई उपयोग नहीं है। उनकी उपस्थिति में होने वाले सभी कार्य निष्काम हैं। इसलिए, यह सोचें कि सभी केंद्र उनके हैं और वह सभी केंद्रों में हैं और इस प्रकार उनके प्रति समर्पित रहें। भगवान वास्तव में ऐसी उच्च भक्ति से बंधे हैं।

7. जैसे-जैसे आप भगवान के नाम और रूप बताते जाएंगे और सभी के प्रति प्रेम प्रदर्शित करते जाएंगे क्योंकि आप समझ गए हैं कि सभी नाम और रूप उनके हैं, आपका मन धीरे-धीरे परिपक्व हो जाएगा। जिस प्रकार फल के पकने के साथ उसका स्वाद बेहतर हो जाता है, उसी प्रकार आप भी अपने अंदर अच्छाई के बढ़ने और बुराई के कम होने को पहचान लेंगे। जैसे-जैसे आपका मन परिपक्व होगा, एक समय आएगा जब आपको अपने गुरु से मिलना चाहिए। यह कहने का मतलब यह नहीं है कि आप उसकी तलाश में निकल पड़ें

या वह आपकी तलाश में आता है. सही समय पर मुलाकात होगी.
सभी अपने-अपने तरीके से आगे बढ़ रहे हैं. आपका स्वभाव आपको एक साथ लाता है, आपको उस पर भरोसा कराता है, आपको सही रास्ता सिखाता है, आपको उसके निर्देशों का पालन भी कराता है। ईश्वर तक पहुँचने का सीधा रास्ता है, यानी चौथी अवस्था प्राप्त करना। आप मार्ग का अनुसरण करेंगे और अपने लक्ष्य तक पहुंचेंगे जो कि चेतना-आनंद है, जो कि ईश्वर है।

8. गुरु द्वारा दिखाया गया रास्ता सच्चा, सीधा और एकता लाने वाला है। यह अच्छी तरह से आजमाया हुआ, प्राकृतिक और दर्द से मुक्त है। जब आप गुरु द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चल रहे हैं, तो संदेह पैदा नहीं होगा; कोई डर नहीं होगा. क्या डर और संदेह अंधकार के मार्गों की विशेषताएं नहीं हैं? वे गुरु द्वारा दिखाए गए सत्य के मार्ग पर आपसे कैसे मिल सकते हैं? इस तरह रास्ता खुद आपसे बात करेगा और कहेगा कि ये सही है. इस तरह, आपके पास अपने गुरु से मिलने और उनसे सीखने के अलावा और कुछ नहीं होगा। यह तरीका आपको परिचित होगा, क्योंकि गुरु और भगवान ने इसे ऐसा बनाया है। तुमसे पहले, उसने रास्ता अपनाया था। उसने तुम्हें रास्ता दिखाया है और तुम उसका अनुसरण कर रहे हो। कितनों को यही रास्ता दिखाओगे? और कितने लोग बाद में इसी रास्ते पर चलेंगे?

जाहिर है सत्य के मार्ग में भय और संदेह का कोई स्थान नहीं है। जब एक बार आपने एक कदम आगे बढ़ाया तो आप पीछे भी हट जायेंगे। मास्टर की मदद केवल पहले कदम के लिए ही है। आपको अपने गुरु द्वारा आपको रास्ता दिखाने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। उसे ईश्वर का दूत समझें जो उन लोगों के लिए रास्ता बताने के लिए भेजा गया है जो पहले बताई गई दोनों दिशाओं में से किसी एक या दोनों में अपने स्वयं के प्रयासों से परिपक्व हो गए हैं। यह ईश्वर ही है जो इस ईश्वरीय दूत को तभी भेजता है जब आप परिपक्व होते हैं।

9. अज्ञान काल में श्रद्धापूर्वक अभ्यास करने को भक्ति कहते हैं; वही, ज्ञान के साथ, ज्ञान कहलाता है। भक्ति के दो विभाग हैं, एक नाम और रूप के साथ भगवान की भक्ति, और दूसरा कर्म है जो सभी के लिए प्रेम है। ज्ञान के दो प्रभागों में से, गुरु द्वारा दिखाए गए सच्चे मार्ग के अभ्यास को योग कहा जाता है और परिणामी अवस्था को ज्ञान कहा जाता है।

जो चीज़ दिखाई नहीं देती उस पर विश्वास करना और फिर उसे पा लेना सभी के लिए स्वाभाविक है। जो विश्वास नहीं करते वे कभी विश्वास नहीं कर सकते। इसलिए, विश्वासियों को कभी न कभी कुछ न कुछ हासिल होगा और अविश्वासियों को कभी कुछ हासिल नहीं होगा

कुछ भी। आप इस साधारण कारण से भी विश्वास कर सकते हैं कि ईश्वर में विश्वास हानिकारक नहीं है। इससे आप अच्छे प्रभाव साझा कर सकते हैं। यह संसार केवल आपमें विश्वास पैदा करने के लिए है। यही सृजन का उद्देश्य है.

विश्वास रखें और आप भगवान तक पहुंच सकते हैं।

10. हालाँकि आप ईश्वर के बारे में कही गई सभी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते, लेकिन कम से कम यह विश्वास करें कि "यहाँ ईश्वर है।" यह बीज अपनी वृद्धि में बहुत शक्तिशाली है। यह इतना शक्तिशाली है कि अन्य सभी को और सभी को अपने आप ही नकार देता है। यह इतना सर्वशक्तिमान है कि आप ईश्वर के अलावा कुछ भी नहीं देख पाएंगे, यहां तक कि खुद को भी नहीं। सचमुच, ईश्वर ही सब कुछ है।

अध्याय IV - शांति

1. शांति क्या है? हालाँकि जब मनुष्य गहरी नींद में होता है तो संसार बना रहता है, फिर भी क्या उसे इसकी कोई परवाह होती है? उसका दिमाग शांत और तरोताजा रहता है।
जब वह दुनिया के सामने होता है और उसमें सक्रिय होता है, तब भी उसका मन उतना ही शांत और तरोताजा रहता है, तब शांति होती है।

2. क्या मन तब भी वैसा ही रह सकता है जब दुनिया हमारा सामना करती है? यह दुनिया के बारे में हमारे अनुमान पर निर्भर करता है। जब किसी की अपनी संपत्ति लूटी जाती है तो मन अधिक उत्तेजित होता है बजाय इसके कि जब दूसरे की संपत्ति भी इसी प्रकार लूटी जाती है। अपनी ही चीज़ों में से एक चीज़ का खोना दूसरे की तुलना में अधिक चिंता का कारण बनता है। क्यों? क्योंकि चीज़ों के बारे में हमारा अनुमान ही उनके बारे में ख़ुशी या चिंता की डिग्री का कारण है। इसलिए, सभी को समान रूप से मानना सीख लेना चाहिए, मन अत्यंत शांत हो जाएगा। अथवा सभी वस्तुएँ अपनी ही समझी जाएँ और अत्यधिक मूल्यवान समझी जाएँ, तो भी दु:ख का कोई कारण नहीं है। क्यों? एक आदमी को क्या पछतावा होगा? जो मन जानता है कि सार्वभौमिक चिंता उसकी क्षमता से परे है, उसे शांत होना चाहिए। इसके अलावा जब किसी को लगता है कि उसका किसी भी चीज़ पर कोई दावा नहीं है या सब कुछ नाशवान है, तो मन शांत रहेगा। यदि कोई सभी को समान दृष्टि से देखे तो स्थायी शांति होगी। शांति किसी के बौद्धिक मूल्यांकन पर निर्भर है।

3. अब मैं इसका उदाहरण दूँगा। एक आदमी सपने से जाग जाता है. सपने में देखी गई चीजों से उसका मन प्रसन्न या परेशान होता है। लेकिन जागने पर उसका मन स्वप्न में होने वाली सभी घटनाओं से अप्रभावित रहता है; यह वैसा ही रहता है. क्यों? क्योंकि, अब जाकर उसके दिमाग ने सपने की सभी बातों को समान रूप से महत्व देना सीख लिया है। उन्हें सपने के खत्म होने का कोई गम नहीं है. क्यों? वह आश्वस्त है कि स्वप्न शाश्वत नहीं है और जागने पर ही समाप्त होना चाहिए। उसी प्रकार, क्या मनुष्य को आश्वस्त होना चाहिए कि वह कुछ समय बाद जागने के अलावा नहीं रह सकता

दुनिया का लंबा सपना, उसका मन अपरिवर्तनीय होगा। यह ताजगी की अवस्था है. यह शांति की स्थिति है.

4. इसका मतलब यह नहीं है कि दुनिया से उसका रिश्ता खत्म हो जाएगा। अब तो बस मन की शांति और ताजगी ही उसकी है। उसके कार्य परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न नहीं हो सकते। मन शांत हो जाने के बाद उसमें एकमात्र परिवर्तन यह है: उसका मन सत्य को जान गया है और अनासक्त हो गया है; इसलिए, यह शांति में रहता है। उसके कार्य परिवर्तनशील होते हुए भी सदैव निष्पक्ष रहेंगे। लेकिन दूसरों के कार्य बदल रहे हैं और निष्पक्ष नहीं हो सकते। इस प्रकार, मन की शीतलता न केवल स्वयं के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए भी बहुत अच्छा परिणाम लाती है। शांति सही आचरण का मार्ग दिखाती है।

5. एक आदमी हाथ में जलता हुआ दीपक लेकर चल रहा है। क्या रोशनी और रास्ते में आने वाले उतार-चढ़ाव के बीच कोई दुश्मनी हो सकती है? वहां नहीं हो सकता.
लेकिन प्रकाश और अंधकार एक साथ नहीं हो सकते। प्रकाश अँधेरे को दूर भगाता है, रास्ते में आने वाले उतार-चढ़ाव को प्रकट करता है और मनुष्य को सावधानी से चलने पर मजबूर करता है, चाहे वह ऊपर, नीचे या किनारे पर चले। यह व्यर्थ शिकायतों के कारण को दूर करता है, जैसे, "उस रोड़े ने मेरे पैर को चोट पहुंचाई" या "इस खोखले ने मुझे फिसला दिया।" इसी प्रकार, शांति प्राप्त होने के बाद, शांति की स्थिति मनुष्य को न तो दुनिया से नफरत करती है और न ही दुनिया से दुश्मनी कराती है। बल्कि यह उस अंधेरे को दूर करता है जो हमारे दृष्टिकोण से दुनिया की वास्तविक प्रकृति और इसकी बाधाओं को छुपाता है। शांति की रोशनी के अभाव में, जो लोगों को अलग-अलग परिस्थितियों में खुद को समायोजित करने में सक्षम बनाती है, वे दुनिया को दुख से भरा मानते हैं, जैसे कि वे सड़क पर बाधाओं के बारे में शिकायत करते हैं। अत: जिस मनुष्य ने समस्त संसार को एक जटिल स्वप्न जानकर परम शांति प्राप्त कर ली है, उसे न तो संसार से असंबद्ध माना जाना चाहिए और न ही उसकी गतिविधियों से असंबद्ध माना जाना चाहिए; वह अकेला ही इसके साथ प्रभावी सामंजस्य में खड़ा है; केवल वही कार्यशील व्यक्ति बनने में सक्षम है। शांति वह है जो व्यक्ति के कर्तव्यों को नियंत्रित करती है।

6. शांतिप्रिय व्यक्ति की चिंता दुनिया के कार्यों को सुधारने में निहित है। क्या उसे इस दुनिया के सामने डर महसूस होना चाहिए, सुधार की क्या उम्मीद हो सकती है, खासकर उन लोगों से जो इसका सम्मान करते हैं और चाहते हैं

इसे अपने पास रखना? वे स्वार्थ के वश में हैं, निष्पक्षता से अंधे हैं। अंधे को रास्ता दिखाने या आँख के अंधेपन का इलाज करने के लिए व्यक्ति की दृष्टि अच्छी होनी चाहिए। इसी प्रकार, दुनिया को सुधारना उसी का काम है जिसने पहले ही दुनिया की परिवर्तनशील प्रकृति से अपनी अपरिवर्तनीय प्रकृति को पहचान लिया है और शांतिपूर्ण बन गया है। ये दुनिया की सेवा करने में मदद नहीं कर सकते। क्यों? क्या कोई इतना कठोर हृदय वाला हो सकता है कि बच्चे के फिसलकर गिरने पर उसे न उठाए? वैसे ही उन बुद्धिमान लोगों के लिए भी जो दुनिया की परेशानियों का सही आकलन कर सकते हैं और लोगों की मदद कर सकते हैं। क्योंकि उसने पहले ही खुद को मन और शरीर से अलग कर लिया है, ऋषि को दुनिया की सेवा के तनाव के तहत कोई चिंता महसूस नहीं होती है, जैसे जीवन सिद्धांत तब भी प्रभावित नहीं होता है जब भरी हुई गाड़ियाँ उस लाश के ऊपर से गुजरती हैं जिसे वह पीछे छोड़ गया है। वह काम या परेशानी से पीछे नहीं हटेगा। केवल वास्तव में महसूस की गई शांति ही ऐसा साहस और शीतलता प्रदान कर सकती है।

7. सभी दिखावे के लिए. शांति ख़राब और काफ़ी कमज़ोर दिखेगी। लेकिन वास्तव में, यह सभी को मात देता है। दृढ़ता और साहस में, यह सभी से आगे निकल जाता है। आख़िरकार, सफलता इन्हीं गुणों पर निर्भर करती है। भले ही मेरु पर्वत गिर जाए, लेकिन यह घटना शायद ही शांतिप्रिय व्यक्ति के मन में एक सौम्य मुस्कान पैदा कर पाएगी, या यह उसे अविचलित छोड़ देगी। यह अवस्था सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों ही मामलों में सहायक होती है। संसार में सच्चा सुख उसका है, और वह सुख बंधन से मुक्ति से आता है। शांति का अर्थ है किसी का भी भला करना

ढंग।

8. शांति में अनेक बाधाएँ हैं। वे आदमी को साबित करने के लिए हैं।

जब वे हमारा सामना करते हैं तो हमें सचेत रहना चाहिए और मन की नाजुक शक्ति को उनकी छाया से भी दूर रखना चाहिए। यदि मन के प्रभुत्व को कुचल दिया जाए, तो वह अपनी सुगंध, ताजगी और रंग खो देगा; यह न तो आपके काम आएगा, न दूसरों को दिया जा सकेगा, न भगवान को अर्पित किया जा सकेगा। जान लें कि आपका मन फूल से भी अधिक नाजुक है। शांतिपूर्ण मन के माध्यम से, अपने प्रति, दूसरों के प्रति और ईश्वर के प्रति अपने सभी कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। इसे पूरे समय वही ताजगी जारी रहने दें।

मन के लिए सभी आशीर्वाद शांति में निहित हैं।

9. अपने मन की शक्ति से अपने आत्मस्वरूप परमेश्वर की निरंतर आराधना करो। मानसिक गुणों वाले बच्चों को यह पूजा देखने दें।
धीरे-धीरे वे अपनी बचकानी शरारतों और आपकी तरह खुश रहने की इच्छा को त्यागना सीख जाएंगे। जैसे ही वे आपकी शांति को देखेंगे, वे स्वयं अपनी योनि से पीछे हट जायेंगे। धैर्यपूर्वक पूजा जारी रखें. मन की अनियमितताओं से दूर न जाएँ। इसके विपरीत, वे आपकी शांति से शांत हो जाएं। सभी को शांति मिलनी चाहिए.

10. मैं एक शब्द में कहना चाहूंगा: सभी वेदों का सार "शांति" है।

अध्याय V - कार्रवाई

1. सभी कार्य ईश्वर के हैं। उसकी शक्ति ने प्रत्येक चीज़ को उसके अपने व्यक्तिगत कार्य में बदल दिया है। उसकी सहायता से अचेतन वस्तुएँ और चेतन प्राणी अपना कार्य करते हैं। सभी कार्य उसके हैं.

2. सभी अपना-अपना काम कर रहे हैं. तो भगवान का इससे क्या लेना-देना है? हम पहले चेतन प्राणियों पर विचार करेंगे और बाद में अचेतन वस्तुओं पर। हम संवेदनशील प्राणी हैं. आइए पहले देखें कि हमारे कार्य किसके हैं।
हम सभी उच्च राज्य की इच्छा रखते हैं और उसके लिए कार्य करते हैं। लेकिन हमारी उपलब्धियाँ एक समान नहीं हैं। कभी-कभी लक्ष्य एक ही होता है और काम भी, लेकिन नतीजों में अंतर क्यों होता है? यहाँ भगवान हमें समझाते हैं कि कार्य उनका है। अन्यथा सभी को एक जैसा होना चाहिए. स्थितियों में अंतर का हिसाब नहीं दिया जा सकता। क्या कोई ऐसा हो सकता है जो अपनी स्थिति में सुधार नहीं करना चाहता हो? दूसरों के प्रति उनकी मंशा जो भी हो, स्वयं के प्रति उनकी मंशा निश्चित रूप से ईमानदार होती है। एक ही इरादे के लोगों की स्थितियाँ फिर भी अलग-अलग होती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी कार्य ईश्वर के हैं।

3. सभी प्राणियों का इरादा एक ही है; फिर भी उनके प्रयास अलग-अलग स्तर के हैं, इसलिए उनकी स्थिति भी अलग-अलग है। इतना कहने के बाद प्रश्न उठता है कि प्रयास क्या है? क्या यह महज़ एक मानसिक छवि नहीं है? इन सभी छवियों का मूल एक ही है, अर्थात् सभी का सामान्य इरादा। फिर प्रत्येक में पुरुषार्थ की छवि भिन्न-भिन्न क्यों होनी चाहिए? यहाँ भी भगवान हमें यह दिखाते हैं कि सभी कार्य उनके हैं।

4. यदि यह कहा जाए कि समान इरादे के बावजूद, प्रयास व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार भिन्न हो सकते हैं, तो प्रश्न उठता है: इस क्षमता का स्रोत क्या है? यह शरीर और मन का है. पर्यावरण का भी इस पर असर पड़ सकता है। कोई भी निर्णय लेने से पहले सभी कारकों को ध्यान में रखना चाहिए

कोशिश। हालाँकि, ये कारक किसी के नियंत्रण में नहीं हैं इसलिए प्रयास कार्य के बराबर नहीं हो सकता है। इसलिए सभी कार्य ईश्वर के हैं।

5. फिर, यदि यह कहा जाए कि शरीर, मन और वातावरण को धीरे-धीरे कार्य के अनुरूप बनाया जाएगा, तो इसका तात्पर्य वर्तमान अक्षमता से है। यह स्वीकार करना है कि सभी कार्य ईश्वर के हैं।

6. अब, क्या यह अच्छा है या बुरा कि लोग अपने उद्देश्य हासिल नहीं कर पाते? यह निश्चित रूप से अच्छा है. क्यों? उनमें से अधिकतर सेल्श हैं। आप स्वयं निर्णय करें कि उनकी सफलता दुनिया की भलाई के लिए है या अन्यथा। आप पूछ सकते हैं: क्या अनसेल्श के प्रयास पूरी तरह से सफल नहीं होने चाहिए? यद्यपि वे सभी दिखावे में निःस्वार्थ दिख सकते हैं, फिर भी वे दोषों से मुक्त नहीं हैं। ये अहंकार पर निर्भर हैं. यदि कल्पित निःस्वार्थता ने दूसरों पर श्रेष्ठता की भावना को जन्म दिया है, तो भगवान उनके उद्देश्य को विफल कर देते हैं और उन्हें सिखाते हैं कि "आप भी दूसरों की तरह हैं और मैं आप पर शासन करता हूं"। दूसरी ओर, स्वार्थ से मुक्त और अहंकार से मुक्त ईश्वर का प्रतिनिधि है, जिसके भीतर ईश्वर को छुपाने वाला अहंकार का बादल मौजूद नहीं है और जिससे ईश्वर सदैव चमकता रहता है। ऐसे सच्चे उद्देश्य (सत्त्व संकल्प) के लिए उसके सभी इरादे सच हो जाते हैं। ईश्वर उसमें प्रत्यक्ष रूप से चमकता है। उसमें कोई अंधेरा नहीं है. केवल वही ईश्वरीय प्रयोजन को यथावत जानता है। उसके माध्यम से ईश्वर अपनी रचना का उद्देश्य पूरा करता है। सभी कार्य भगवान के हैं.

7. यदि पूछा जाए: क्या एक भी व्यक्ति सच्ची नियत का नहीं है? और संसार को संपूर्ण आशीषें क्यों नहीं मिलनी चाहिए? इसका उत्तर, जो एक रहस्य है, यह है कि जो संत जानते हैं कि सभी कार्य भगवान के हैं, वे इसे दूसरों को भी बताना चाहते हैं। यह जानने से बड़ा कोई लाभ नहीं है कि सभी कार्य ईश्वर के हैं, हमारे अपने नहीं। यह ज्ञान अपने आप में सभी आशीर्वादों को समाहित करता है। इसलिए संतों का इरादा दूसरों को ईश्वर और उसके कार्यों के ज्ञान में स्पष्ट रूप से निर्देश देना है। फिर भी, वे यह नहीं कहते कि "ईश्वर को अभी जानो," बल्कि वे ज्ञान के तरीके और साधन सिखाते हैं और हमें सही आचरण के लिए प्रोत्साहित करते हैं - केवल इतना ही। वे यह नहीं कहते, "तुरंत मुक्त हो जाओ।" क्यों? क्योंकि आम लोगों के लिए ये संभव नहीं है. न ही संत भगवान से कहते हैं,

"लोगों को तुरंत आज़ाद करो।" क्योंकि संत अहंकार से मुक्त होते हैं और सोचते हैं, "भगवान जानता है कि उसे क्या करना चाहिए और कब करना चाहिए।" मेरे पास उससे कहने को क्या है?" वे केवल अपना काम करना चाहते हैं, इस काम से मिलने वाले फल में कोई दिलचस्पी नहीं रखते। वे जान चुके हैं कि ईश्वर ही कर्मों का फल देता है। बस वे दुनिया में होने वाली घटनाओं को देखते हैं और अपना काम करते हैं, कभी भी अपनी खुद की दुनिया बनाने के बारे में नहीं सोचते हैं। क्यों? ऐसा करना एक प्रकार का अहंकार है। सृष्टि वैसी ही है जैसी होनी चाहिए। सब कुछ व्यवस्थित है। सभी कार्य भगवान के हैं.

8. यह जानते हुए कि उनके कार्य उच्च शक्ति के अधीन हैं, वे अपने दिल को प्रिय कुछ हासिल करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? नहीं वे ऐसा नहीं कर सकते। वे अपना कार्य केवल एक कर्तव्य के रूप में करेंगे। शास्त्र कहते हैं, "कर्म करो, लेकिन उसके फल के बारे में मत सोचो।" जिस प्रकार गुस्सा किसी व्यक्ति पर अनजाने में हावी हो जाता है, भले ही वह गुस्सा न करने के लिए दृढ़ हो, उसी तरह सच्चे इरादे (सत्त्व संकल्प) के संत भी दुनिया के अधर्मों से चौंक सकते हैं और अनजाने में सोचते हैं, "हे भगवान, इसे अच्छा कर दो!" " यदि ऐसा है तो निश्चित ही ऐसा होगा और अच्छाई की जीत होगी।' यह दुनिया में कुछ असाधारण घटनाओं का कारण है। ये असाधारण घटनाएँ एक ऋषि के मन में चोरी हुई इच्छा का परिणाम हैं। यह प्रकृति का नियम है. इसे कौन बदल सकता है? सभी कार्य भगवान के हैं.

9. जो कुछ भी घटित होता है, वह चीजों के प्राकृतिक क्रम में होता है। साथ ही, यह सही भी है. सब कुछ उसकी इच्छा से ही होता है। सच तो यह है कि यह सोचना ग़लत नहीं है कि "वह चोर से चोरी करवाता है।" क्यों? क्योंकि दण्ड के समय वह चोर को डकैती का फल भी भुगताता है। अत: चोर के प्रति कोई दुर्भावना नहीं होनी चाहिए। ज्ञान का फल ऐसा है कि सभी कर्म ईश्वर के हैं। यद्यपि चोर के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है, चोरी के प्रति अरुचि है। यह हमारे ज्ञान का भी परिणाम है कि सभी कार्य ईश्वर के हैं। यह कैसा है? क्योंकि चोर को स्वयं चोरी पसंद नहीं है: यदि उसका सामान कोई दूसरा चुरा ले तो क्या वह चुप रहेगा? उसके द्वारा नहीं होगा।

कौन इस बात से अनभिज्ञ हो सकता है कि अच्छाई सही है और बुराई ग़लत है? इसलिए यह ज्ञान कि सभी कार्य ईश्वर की इच्छा हैं, दुनिया में व्यवस्थित आचरण का युग लाएगा। हमारा ज्ञान इससे आगे नहीं बढ़ता। हम दोहरा सकते हैं

केवल वही जो हम जानते हैं। हमें इस बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि हमारी जानकारी से परे क्या है। यह भी ईश्वर की इच्छा है।

10. ईश्वर द्वारा हमें दिए गए ज्ञान के फलों में से एक यह ज्ञान है कि सभी कार्य ईश्वर के हैं। हम ईश्वर से यह पूछने में असमर्थ हैं, "आप ऐसा क्यों करते हैं?" क्योंकि हमारे कर्मों का फल हमेशा हमारी इच्छा के अनुसार नहीं होता, सभी धर्म हमारी शक्तिहीनता की समान स्थिति को स्वीकार करते हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि हमारी शक्तियाँ सीमित हैं, हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि सभी कार्य ईश्वर के हैं। जो कानून हम पर लागू होता है, वह अचेतन वस्तुओं पर भी लागू होता है।

हमारा कानून उनसे बेहतर नहीं है. सब एक हैं। यद्यपि कुछ लोग यह स्वीकार नहीं करते कि सभी कार्य ईश्वर के हैं, फिर भी वे अपनी असमर्थता स्वीकार करते हैं। यह स्वयं ईश्वर का कार्य है।

अध्याय VI - अहंकार

1. हे अहंकार, संसार की सारी बुराइयाँ तुझी से हैं। तुम्हें कुचलने के लिए राजा कानून बनाते हैं और बुद्धिमान लोग सबक देते हैं। अनादि काल से उनके प्रयासों के बावजूद, अफसोस! तुम अभी भी जीवित हो; तुम बस छिप जाते हो और बार-बार प्रकट हो जाते हो। क्या आपका कोई अंत नहीं हो सकता? हाँ, यह निश्चित रूप से निकट आ रहा है। एक और अहंकार आपको मारने लगा है। यह सार्वभौमिक अहंकार है जिसे "मैं ब्रह्म हूं" कहा जाता है।

2. एह! अहंकार, यह मत सोचो कि तुम्हारा शत्रु तुम्हारे ही जैसा है। तुम नाशवान हो जबकि वह नहीं है। आप "मैं" के रूप में अभिमानी हैं क्योंकि आप हमेशा "मैं", "आप" और "वह" के रूप में अंतर करते हैं, लेकिन आपका शत्रु इस दंभ से मुक्त है। कैसे? वह सभी मतभेदों में सामंजस्य स्थापित करता है, सभी को अपने में समाहित कर लेता है।

इसके अलावा, आप उसके प्रति शत्रुता महसूस करते हैं क्योंकि वह आपको मारने के लिए खड़ा हुआ है। लेकिन उनके मन में आपके प्रति कोई गलत भावना नहीं है. यह कैसा है? क्योंकि तुम्हें उसकी उपस्थिति में नहीं पाया जा सकता। वह आपको अपने अंगों का एक हिस्सा मानता है। उसकी निकटता में आपकी हानि आपकी अपनी मिथ्या का कार्य है; वह तुम्हें मारने के बारे में नहीं सोचेगा क्योंकि उसकी नजर में तुम्हारा कोई महत्व नहीं है। इसलिए, अहंकार, तुम उसके दुश्मन हो, लेकिन वह तुम्हारा नहीं है। अधिक संक्षेप में कहें तो, आप स्वयं अपने शत्रु हैं। क्यों? अपने लालच के कारण आपने स्वयं को उस महान व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत किया जैसा कि आप अन्यत्र करेंगे।

तत्क्षण, तुम खो गये; इसलिए, सार्वभौमिक स्व आपको निगलकर आपको अस्पष्ट कर देता है और फिर सर्व-प्रकाश के रूप में चमकता है।

3. एह! अहंकार, आपके कार्यों की बुराइयों की कोई सीमा नहीं है। आप तब तक संतुष्ट नहीं हैं जब तक कि आप दूसरों से ऊंचे न हो जाएं और दूसरे आपसे नीचे न हो जाएं।
आपकी इच्छाएँ अनंत हैं, जैसे "मैं किस उपाधि से सम्मान पाऊँ?" “मैं किस रूप में सुंदर दिखूं?” “क्या दूसरे लोग मेरे सामने झुकते हैं? क्या दूसरे चुपचाप मेरी बात मानते हैं?” "क्या दूसरे लोग कहते हैं कि मुझसे श्रेष्ठ कोई नहीं?" अफ़सोस! तुम्हारा जीवन कितना छोटा है! और फिर भी आप कितनी आकांक्षा रखते हैं! और कितना

तुम बुरा करते हो! आपने खुद को धोखा दिया है कि ऐसे विचारों में और खुद को अन्य सभी से अलग करने में खुशी है। यह आपके हित में नहीं है. क्यों नहीं? क्या दूसरे भी इन सबके हक़दार नहीं हैं? उन चीज़ों में आपका हिस्सा क्या है जो लाखों लोगों के लिए सामान्य हैं?

ऐसी स्थिति होने पर, सब पर शासन करने की व्यर्थ इच्छा मत करो। अपनी व्यर्थ इच्छा से तुम अपना और दूसरों का अनिष्ट करते हो। मेरी मित्रतापूर्ण सलाह सुनो. सच कहूँ तो, जिसे तुम अपना नश्वर शत्रु मानते हो वही तुम्हारा मित्र है। वह जानता है कि आपको सच्ची महानता और आशीर्वाद के योग्य कैसे बनाया जाए। उसके प्रति समर्पण करो. □यह सार्वभौमिक अहंकार आपके साथ शत्रु जैसा व्यवहार नहीं करता बल्कि आपका सबसे बड़ा हितैषी है।

4. जब तक आप स्वयं को उसके प्रति समर्पित नहीं कर देते, तब तक आप किसी भी तरह से यह नहीं जान सकते कि वह आपके साथ क्या करेगा। मैं इसके बारे में कितना भी बोलूं, तुम नहीं समझ सकते। यह अनुभव की बात है. निःसंदेह वह तुम्हें अपने राज्य में ऊँचा उठाने से कम कुछ नहीं करेगा। इसलिए, अपने भविष्य के बारे में चिंतित न हों; सीधे अपने आप को समर्पित कर दो। यदि समर्पण के तुरंत बाद ही आनंद आप पर हावी न हो जाए तो आप हमेशा इससे दूर हो सकते हैं। जिस प्रकार दूध पीना सुखद स्वाद के साथ शुरू होता है और भूख की संतुष्टि के साथ समाप्त होता है, उसी प्रकार समर्पण प्रसन्नता से शुरू होता है और पूर्ण आनंद पर समाप्त होता है, जो सुख और दर्द से भी परे है। □अत: आपका लक्ष्य, निस्संदेह, यह सार्वभौमिक अहंकार (मैं-ब्राह्मण) हूं।

5. सरेंडर के बाद आपका नया नाम क्या होगा? आपके अलावा कोई नाम नहीं है। वेद आपकी स्तुति करते हैं; संसार तेरी प्रशंसा करता है; धार्मिक शिक्षाओं का सार आप स्वयं हैं। □तब आपका स्वरूप क्या है? सब रूप तुम्हारे हैं। ऐसा कोई रूप नहीं जो आपका न हो। पूजा-मंदिरों में जो स्थापित है, वह तुम हो; वेदों में जो वर्णित है वह आप ही हैं; उत्सव और उत्सव सब आपके लिए हैं। अब आपकी शक्ति क्या हो सकती है? आपकी उपस्थिति में संसार सक्रिय है; प्रत्येक जो कुछ भी है, वह आपके कारण है। ब्री ने कहा, सभी चीजें आपकी महिमा करती हैं और आपके अस्तित्व की गवाही देती हैं। ऐसा करना उनका कर्तव्य है। आपने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि आपका ये राज्य होगा. तुरंत शुरुआत करें, आत्म-अभिमानी न बनें। □सार्वभौम अहंकार आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

6. क्या आप अपने सपने से जागना चाहते हैं या उसमें बने रहना चाहते हैं? स्वप्न की छवियाँ कब तक रहेंगी? आलस्य मत करो, अपनी नींद तोड़ो, जागो!
आप अपनी मानसिक छवियों को देख रहे हैं और अधिक से अधिक कल्पना कर रहे हैं। यह सब व्यर्थ है. बस यह पता लगाओ कि वह कौन है जो दर्शन देखता है। अपने आप को यह धोखा न दें कि आप ही वे हैं जो आप में उठते और डूबते हैं। जागो। जैसे ही आप जागेंगे आपको पता चल जाएगा कि जागना इस सपने से बेहतर है। उठना! सार्वभौमिक अहंकार आपको जागता हुआ देखकर प्रसन्न होने की प्रतीक्षा करता है।

7. वर्तमान अहंकार स्वप्न के ख़त्म होने से न डरें। एक बार जब आप जाग जाएंगे तो आप इसका और भी अधिक आनंद लेंगे। अब आप भ्रमित नहीं होंगे और बिना किसी भ्रम के प्रसन्नतापूर्वक वैराग्य के साथ इसका पालन करेंगे। सभी दिखावे की मूर्खता समझ में आ जाएगी और आप पर कोई बोझ नहीं पड़ेगा। सपने में आपकी मानसिक कल्पना आकार लेती है। जागने पर तुम्हें स्वप्न केवल स्वप्न ही मालूम पड़ता है। स्वप्न को जाग्रत अवस्था समझने की भूल न करें। स्वप्न को स्वप्न ही जानो। ऐसा करने के लिए, आपको "मैं-ब्राह्मण" (सार्वभौमिक अहंकार) की स्थिति तक पहुंचना होगा और अहंकार के भ्रम से जागना होगा।

8. मैं ने तुम्हें तुम्हारे हित के लिये उपदेश दिया है, अपने हित के लिये नहीं। यदि आप मुझ पर विश्वास करते हैं, तो आपको जो मैंने आपको सिखाया है उस पर कार्य करना चाहिए। दूसरी ओर, यदि तुम्हें मेरी कही बातों में कोई अच्छाई न दिखे तो इस आदर्श से विमुख हो जाओ। यदि मेरी सलाह और संतों की सारी सलाह का आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ? इससे ऊंचा कोई राज्य नहीं है. मेरा विश्वास करो, यह तुम्हारी भलाई के लिए है कि तुम्हें इस सत्य का एहसास हो; और आपके माध्यम से दूसरों को भी इसका एहसास हो सकता है। आत्मग्लानि से मुक्त रहें. तुरंत शुरू करें.

एहसास करें कि सार्वभौमिक अहंकार आपका अपना है।

9. हे अहंकार, देख तू किस प्रकार सब का दास है, और इसलिये दुःख उठाता है। तुम्हारी अवस्था कितनी दयनीय है! सभी आपके विरोधी हैं! जब आप "केवल मेरे लिए" कहते हैं, तो अन्य सभी भी "केवल मेरे लिए, केवल मेरे लिए" संघर्ष करेंगे। जब आप कहते हैं, "मैं महान हूं," तो वे विरोध करते हैं, "क्यों? हम भी कर रहे हैं।" सभी आपके विरोधी हैं. दूसरों के कारण होने वाली परेशानियों के कारण आपकी मानसिक छवियाँ लाखों गुना बढ़ जाती हैं। क्या आपको उनसे ऊपर नहीं उठना चाहिए और गुरु के प्रति समर्पण करके विरोध नहीं करना चाहिए? तब तुम्हारे सभी शत्रु तुमसे मित्रता कर लेंगे। यदि आप दूसरों से कहते हैं, "यह सब आपका है," तो हर कोई आपका मित्र बन जाता है। यहाँ केवल एक ही है

जो तुम्हें इतना उदार बना सकता है और वह है "मैं-ब्राह्मण" (सार्वभौमिक अहंकार)।

10. मैं केवल एक शब्द कहूंगा और यह मेरे अहंकार के कारण नहीं है। यह बस मेरा कर्तव्य है. मैं यह शब्द सिर्फ आपके या अकेले मेरे भले के लिए नहीं कहता। यह सभी की भलाई के लिए है. सत्य "मैं-ब्राह्मण" (सार्वभौमिक अहंकार) है।

